मासिक

RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

वर्ष - 20 अंक - 4
(फरवरी - 2024)
Vol - XX Issue No - IV
(February - 2024)

मूल्यः 100 /- रूपये

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनंसचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

8.0 IMPACT FACTOR

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 8.0
» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427
AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-20 अंक - 4 , फरवरी - 2024
Vol - XX, Issue No. IV
February - 2024
Impact Factor - 8.0
aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

संपादक- डॉ. मोहन बैरागी

संपादक मंडल :-

डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोंसले (पुणे)
प्रो. उमापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा

सहायक सम्पादक :-

डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, उज्जैन

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), डॉ. रत्ना कुशवाह, (अंडमान निकोबाद), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (**Kruti Dev 010**) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (**Times New Roman**) ,एरियल फोंट (**Arial**) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. **Please Follow- APA/MLA Style for formatting** अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक:- **Union Bank of India,**

Account Holder - Aksharwarta
Current Accont NO. 510101003522430
IFSC- UBIN0907626 Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि युपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का उपयोग करें
तथा भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत, मोबा :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

नोट:- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।

Peer Review Board/Committee

1. **Dr. Shalini Gupta, Asasistant Professor,ovt. Ganesh Shankar Vidyarthi College,Mungaoli,Ashoknagar ,MP**
2. **Shishir Desai, UDT,Govt.Girls.H.S.scool Sanawad M.P.**
3. **Dr. Parikshit Layek, Sri RamaKrishna Sarada Ashrama Teacher's Training College, Hazaribag.**
4. **Vandana Singh Yadav, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand**
5. **Dr. Mukesh Chandra Dwivedi, Principal, RSGU PG College Pukhrayan Kanpur Dehat, 209111**
6. **DIPITI YADAV, BABA SHAEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY, LUCKNOW U.P,**
7. **Dr. PRABHA CHOUDHARY,Jawahar Inter College, Rardhana, Meerut**
8. **Dr APARNA U NAIR,St. XAVIER'S COLLEGE VAIKOM, KOTHAVARA, KOTTAYAM**
9. **Dr Bhawna shrivas,Govt geetanjali girls p g College Bhopal Madhya Pradesh**
10. **Sneha Khare,Govt. P.G college Rajgarh**
11. **Dr Jeetendra Kumar Pandey, Government College Nashtigawan Rewa MP**
12. **Dr Radhika Devi,A.K.P(P.G) COLLEGE KHURJA BULANDSHAHR**
13. **Rashmi pandey,Atal bihari vajpayee University bilaspur Chhattisgarh**
14. **Dr. Nisha Sharma,Future Institute of Management & Technology**
15. **Dr. Buddhi prakash, Associate professor, Jain diwakar kamla college, kota, rajasthan**
16. **Dr. Kumari Subhra Rani Sil (Assistant Professor),S.B.M. Teachers' Training College, Hazaribag**
17. **Dr. Priya Deo Assistant Professo,Sri Ramakrishna Sarada Ashrama Teacher's Training College, Hazaribag)**
18. **Dr. Samapti Paul,Principal,Sri Ramakrishna Sarada Ashrama Teacher's Training College, Hazaribag)**
19. **Dr. C.P. Raju, HOD, St. Aloysius College, Elthuruth, Trissur, Kerala**

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र. से शोध, प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठी, अवार्ड आदि के लिए अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं संस्था कृष्ण बसंती शैक्षणिक एवं सामाजिक जनकल्याण समिति, उज्जैन, मप्र. एम ओ यू हस्ताक्षरित।

अनुक्रम

» यथार्थ के धरातल पर मन्नू भंडारी की कहानियाँ
रूवि सिंह 07

» स्वातंत्र्योत्तर किसान-मजदूर और निम्न वर्ग से संबंद्ध हिंदी उपन्यास
डॉ. सोहन लाल 10

» शशांक का जीवन-रहस्य
नेहा कुमारी 13

» निर्गुण भक्ति काव्य और समकालीन दलित समाज
सत्यनारायण खोईवाल, प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा 15

» जीवन की आशाओं पर झपट्टा मारती - 'चील'
दीपक कुमार सेठिया 18

» कामायनी और गीतांजलि का दर्शन
प्रिया श्रीवास्तव 20

» उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति की झलक धनानन्द पाण्डेय 'मेघ' की यादों के झरोखे से
डॉ. रेखा मेहता 22

» ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों और दलित समाज का प्रतिरोध
रोहित यादव 25

» "हिन्दी कथा-साहित्य में मध्यवर्गीय स्त्रियाँ दशा एवं दिशा"
शहजादी खातून 27

» यात्रा के कलेवर में प्राकृतिक छटा
कु. चाँदनी गोले 32

» "महादेवी वर्मा के साहित्य में स्त्री विमर्श"
श्रीमती प्रेमलता पाटिल 35

» औपनिवेशिक भारत में प्रेस का विकास
शीतल यादव, डॉ. पंकज शर्मा 39

» पितृ भक्त परशुराम "एक विवेचनात्मक अध्ययन"
आशीष पाठक 43

» बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन की क्षमताएँ एवं संभावनाएँ : एक भौगोलिक अध्ययन
अजय कुमार यादव 45

» वेदांङ्ग ज्योतिष : एक अध्ययन
नर्वदेश्वर पाण्डेय, डॉ. प्रभाकर पाण्डेय 49

» "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत व्यवसायिक शिक्षा में किए गए प्रावधानों का एक अध्ययन"
किरन गुप्ता, डॉ. रतन सिंह 52

» 'अगम बहै दरियाव' उपन्यास में चित्रित लोक-संस्कृति
अखिलेश कुमार मौर्य 54

» इतिहास बोध और निर्मल वर्मा
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्रा 57

» भारतीय साहित्य में प्रकृति-चित्रण की प्रासंगिकता
विश्राम कुमार, डॉ. विनय कुमार दूबे 60

» श्रीवामनपुराणस्य अर्वाचीनसाहित्ये प्रभावः
राहुल सिंह सोलंकी 63

» लेखक के दृष्टिकोण में आत्मकथा लेखन के प्रयोजन
उर्मिला कुमारी, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शुक्ल 65

» छायावादी काव्य : राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना
डॉ. अमित कुमार 68

» बिहारी सतसई में आभरण, अलंकरण एवं अंगराज-सौंदर्य
डॉ. ममता शर्मा 70

» निराला की 'अर्चना' में रूप-सौन्दर्य का सौरभ
सुमेधा दुबे 73

» रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से पड़ने वाला प्रभाव 'हनुमानगढ़ जिले के विशेष सन्दर्भ में'
कृष्ण लाल, डॉ. हरवीर यादव 77

» हिंदी की आदिवासी कविता का आर्थिक परिप्रेक्ष्य
डॉ. परविंदर कौर 79

» अंतरराष्ट्रीय संबंधों में मानवाधिकार की भूमिका
डॉ. शकरी चौहान 81

» दलित कहानी में ब्राम्हणवाद के प्रति विद्रोह
रिकू शाह 83

» अनुवाद की समस्याएँ
माधुरी सुरेशराव दीक्षित-क्षीरसागर
डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे 86

» प्रेमचंद्र के कथा साहित्य में बालमन की अभिव्यक्ति
पूजा सिंह 89

» हिंसा का मार्ग छोड़ शांति पर बल देना होगा
डॉ. संदीप कुमार 92

» आर्य समाज का हिंदी के विकास में यांगदान
कमलेश 94

» नरसिंहपुर जिले में स्वतंत्रता संग्रामः राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में
डॉ. अमित कुमार ताम्रकार 97

» जनपद बदायूँ की ऐतिहासिकता
मोहित कुमार सिंह, डॉ. पंकज शर्मा 101

» राजा भोज द्वारा स्थापित जालोर संस्कृत पाठशाला : अतीत एवं वर्तमान
डॉ. समय सिंह मीना 103

» धर्मवीर भारती की कहानियों में नारी जीवन
अन्जू परिहार 107

» नई शिक्षा नीति 2020 : अवसर एवं चुनौतियाँ
योगेश बनिया, डॉ. पंकज पारीक 111

» ज्ञानेंद्रपति की कविताओं में युग चेतना
बिजय कुमार पधान 114

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 8.0
Vol - XX, Issue - IV, February - 2024
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति की झलक धनानन्द पाण्डेय 'मेघ' की यादों के झरोखे से

डॉ. रेखा मेहता

राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी, जिला- चम्पावत

मानव जिस स्थान विशेष में जन्म लेता है, वहीं की माटी की सुगन्ध, हवा की शीतलता और निर्मल जल के सेवन में साँसें लेता है। वहीं वायु, जल और माटी की सुगन्ध उसकी धमनियों और सिराओं में अनवरत रूधिर कणिकाओं की भाँति प्रसारित होती रहती है। मातृभूमि जिसकी जहाँ भी हो उसके लिये वह जननी और जन्मदाता पिता की तरह होती है। उसका महत्ता का बखान वह शब्दों में सीमित नहीं कर सकता। माँ-पिता और जन्मभूमि हर प्राणी के लिये सबसे प्रिय होते हैं।

नगाधिराज श्वेत हिमालय की छत्रछाया में अवस्थित उत्तराखण्ड की रत्नगर्भा धरा की मनोरम वादियों की गोद में पैदा होने वालों की तो और भी महत्ता हो जाती है। यहाँ की प्राकृतिक छटा, पर्वतांचलों की हरियाली, लहलहाती फ़सलें, कल-कल निनाद करती हुई पावन नदियों की धारा इस धरा को विश्व में विशिष्टता प्रदान करते हैं।

ऐसे ही मनोरम प्रकृति की सुरम्य उपत्यका में स्थित जनपद, पिथौरागढ़ के विशिष्ट ग्राम-नैनी (उड़ाई) में 02 नवम्बर 1952 में पिता स्व. पं. मित्रदेव पाण्डेय एवं सादगी निर्मल स्वभाव की धनी माता श्री स्व. सरस्वती देवी की सुसन्तति के रूप में जन्मे श्री घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' द्वारा विरचित कुमाऊँनी गीत संग्रह ''नरै'' मेघ जी की खड़ी बोली में प्रकाशित अन्य गीत एवं कहानी संग्रहों में से एक है। नरै में मेघ जी की कुमारों की प्राकृतिक छटा,वहाँ की संस्कृति लोक साहित्य एवं श्रृंगार से सम्बन्धित तमाम यादें पिरोई गई हैं।

आपके ग्राम के 4.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पाठशाला देवलथल में मात्र हाईस्कूल तक की शिक्षा की सुविधा के रहते मेघ जी 1970 में लखनऊ में पहले से रह रहे अपने बड़े भाइयों के साथ आगे की शिक्षा गृहण करने के लिये अपनी मातृभूमि की तमाम यादों को लिए हुये आ जाते हैं और यहीं रोजगार की तलाश में अन्त में यहीं पर सेवा करते हुये यहीं के होकर रह जाते हैं। यह इसलिये भी करना पड़ा क्योंकि तत्कालीन समय में कुमाऊँ में शिक्षा और नौकरी की इतनी सुविधा नहीं थी।

मेघ जी अपने जन्म स्थान नैनी से दूर लखनऊ में अवश्य रह रहे थे किन्तु उनके अन्तर्मन में हर समय पहाड़ की ही छवि रहती थी। वहाँ बचपन की यादों ने जीवन की तमाम विडम्बनाओं और कठिनाइयों ने उन्हें कवि बनने की प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा के रहते अन्य 8 काव्यकृतियों में से एक कुमाउँनी गीत संग्रह 'नरै' भी है। 'नरै' की व्याख्या एवं तीन मात्राओं के इस अक्षर में और भी व्यापकता का समावेश हुआ है। 'नरै' शब्द में सागर सी गहराई, धरती का सा विस्तार एवं आसमान सी ऊँचाई दृष्टिगोचर होती है। हिन्दी खड़ी बोली का प्यार शब्द नरै (नराई) से सीमित सा लगता है जिसका अंग्रेजी अनुवाद का लव (स्वअम) और भी गौढ यानी सीमित हो जाता है।

कुमाउँनी बोली के शब्दों की वैविध्यता एवं महत्ता इतनी व्यापक है कि भाषा के रूप में अभी तक जनमानस के सम्मुख नहीं आ पाया है। उत्तरांचल की पावन एवं दिव्यतम धरा पर एक से एक विद्वान निवास करते हैं। उनेक मार्गदर्शन एवं कटिबद्धता के रहते यह दुरूह कार्य भी निकट भविष्य में हो जायेगा। प्यार शब्द मूलतः सभी के लिये प्रयुक्त हो जाता है किन्तु यह अपने नरै की अपेक्षा कम विस्तृत भाव रखता है। लव (स्वअमद्ध तो मात्र रिश्ता विशेष के लिये प्रयुक्त होता है हालांकि पाश्चात्य संस्कृति का यही एक प्रचलित शब्द हो सकता है। हमारे पहाड़ में प्यार कह देना कुछ असहजता प्रकट करता है लेकिन नरै में ऐसा कुछ भी नहीं है नरै में सम्बन्धों में ममता, वात्सल्य, संस्कार संसकृति एवं सभ्यता का प्रादुर्भाव होता है। नरै शब्द हर सम्बन्धों की पराकाष्ठा प्रदर्शित करता है। जिस तरह दूध से दही, दही से मक्खन और फ़िर मक्खन से घी का विशुद्ध रूप सामने आता है जो हर प्राणी रसास्वादन आनन्द पूर्वक करता है। माता-पिता, बच्चों, पारिवारिक सदस्यों, वहाँ की वादियों, हवा-पानी, खेत-खलिहान के लिये सामूहिक रूप से 'नरै' शब्द को प्रयुक्त किया जाता है। इनके प्रति अपनी प्रगाढ़ता, प्रतिबद्धता, तड़पन और भावातिरेक पैदा करने वाला शब्द नरै मानवीय सद्गुणों एवं प्रवृत्तियों को उत्पन्न करता है।

मेरी इजु कांहि गौ हरै
मैकै लागी गै नरै
ब्या बटी का बाद म्यरि
भौ ले है गे परै
परदेश में आई बटी
मै कतुक रवै गयूँ
इजा बाबू छोडि बैर,
निसुरै है रयूँ
मैं गयूँ अच्यान झुरै
मेंकें लागि गै नरै[1]

रचनाकार जब अपने अध्ययन एवं रोजगार की खोज में अपना पहाड़ छोड़कर मैदान में अवास्थित हो जाता है तो वह चाहते हुये भी अपने पहाड़ की सुरम्य वादियों में विचरण नहीं कर पाता। जितना वह अपने पहाड़ से दूर होता है उतना ही वह अपने अन्तर्मन में पहाड़ जीने लगता है। अपनी यादों को मूर्त रूप देने की प्रत्याशा में 'नरै' जैसे गीत संग्रह का सृजन होता है। विभिन्न भावों, अनुभावों, सद्भावों एवं सद्भावनाओं पर केन्द्रित कुल 49 गीत 'नरै' संग्रह में उद्धृत हैं।

विद्या की एवं बुद्धि की देवी माँ सरस्वती की वन्दना के बिना कोई भी कविता संग्रह सफल नहीं हो सकता।

जै-जै माता सरस्वती, तेरी जे-जैकार ।
ज्ञान को उज्यालो लिजी, तेरी जै-जैकार ।।

ज्ञान की छै अम्बे.
तू छँ जगमाता ।
विद्या की छै बुद्धि की छै-
त्वी छै भाग्य विधाता ।।
ज्ञान ध्यान मान मिलं, त्यारा दरबार ।
जै जै माता सरस्वती, तेरी जै-जैकार ।।2

इसी के साथ ही माँ पूर्णागिरी एवं परम ब्रह्म परमेश्वर भगवान शंकर की वन्दना भी संग्रह के लिये अपरिहार्य हो जाता है। पहाड़ की वादियों के मनोरम दृश्यों के ये भगवान की माया का वर्णन कर मेघ जी ने भगवान को याद किया है।

लागि जा बाटा मांठु मांठु पूर्णागिरी मंदिर ।
जैकारा लगूंनै हिट्या पूर्णागिरी मंदिर ।।
कसि ल्हिया कमर पैली, हिटि जाला उकाला,
बाटा लाग्या राति ब्यांण, पुजि जाला छकाला ।
मन में धरया मै को नाम, बणि जालि तकदीर,
जैकारा लंगूनै हिट्या पूर्णागिरी मंदिर ।।
लागि जा बाटा मांठु-मांठु पूर्णागिरी मंदिर ।
जैकारा लगूंनै हिटया पूर्णागिरी मंदिर ।।[3]

रंगीले पहाड़ से परदेश को विदा होते वक्त की पत्नी के अन्त न की पीड़ा, वियोग की पराकाष्ठा पर आधारित गीत 'जा सुवा जा जा'' बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है। नारी एक तरफवियोग की ज्वाला में जलती है जब उसका पति छुट्टी काटकर पुनः सेना में जाने लगता है। उसे चिन्ता रहती है सीमाओं में दुश्मनों का सामना करते-करते पता नहीं कब क्या हो फिर वह अपने पति को देश का सपूत कह कर उसका उत्साहवर्धन करती हुई विदा करती है लेकिन कहती है तुम मुझे याद करते रहना मुझे हिचकी लगाते रहना, चिट्ठी पत्री देते रहना, कहती है जब अगले साल घर आओगे तो मेरे लिये मुरली (वंशी) जरूर ले आना क्योंकि उसको अपने कृष्ण से पति से मुरली की सुरीली धुन सुनना बेहद आल्हादित करता है ।

बेलि तलक तुम बुलां छया
भैर भितेर खिलखिलाछ्यां ।
कभै-कमै झुट्टी-मुट्टी,
बात-बात तमे तुम रिसांछ्या ।।[4]

मेघ ने बसन्त के महिने की शोभा का वर्णन किया है। पहाड़ों में चौत मास के महिने में विवाहित लडकियों को भिटोला दिया जाता है फिर वह अपने मायके जाती है इस प्रसंग को ध्यान में रखकर मेघ ने अपनी लेखनी चलायी है। 'कसिके जूँ मैत' व 'उदर की पीड' में कवि ने महिला के जीवन का संघर्ष लेखनी के द्वारा सबके सम्मुख रखा है।

ऐ गौ चौत म्हैण
ऐजा मैत एजा बैण
ऋतु बसन्त नौर्त जात
घ्यूक पुवा. इजुक् हात् ।[5]

चैत के महीने में जब कोयल अपना सुरीला संगीत सुनाने लगती है तो बहन भाई को आने के लिए कहती हैं। लेकिन बहन अपनी घर गृहस्थी में फंसी रहती है वह माइके आने में सर्वथा असमर्थ पा रही है। तब कहती है हे घुघुती तू मेरे सामने बोलना बन्द कर दे क्योंकि मुझे एक तरफपरदेश में रह रहे पति की याद आती है तो दूसरी तरफमाइके में माता-पिता, भाई-बहनों की।

दिन रात बित्या बितिज्ञान म्हैंणा
ऐगौ चैत म्हण
मैं रुलै ऐ जां घुघुति बैंणा,
तु जन बासे ये म्हैण चैत
तु ले दुःखी छै मैले दुःखी छुं
कैथें करनूं हम शिकैत ।।[6]

कवि ने जीवन के हर पक्ष को अपनी लेखनी से कोरे कागज पर उतार कर कागज को महत्वपूर्ण बना दिया हैं कहीं वह लड़का-लड़की के बीच के अन्तर को बनाये रखने वाले समाज की निन्दा करते हैं वहीं पर्यावरण की भी उन्हें चिन्ता होती है। उन्हें अपनी दुद बोली के प्रति बड़ी ही चिन्ता हैं पहाड़ की खुली-खुली वादियों, अपनी बोली, संसकृति, त्यौहारों, मेलों को इसी तरह चलते चलाते रहने की आकांक्षा उनके मन को कचोटती रहती है।

कहीं गंगा नदी के मैले होने की चिन्ता करते हैं तो वहीं अपने माता-पिता जो पहाड़ में रहते हैं उनके प्रति अगाध प्रेम दर्शाते हुये वहाँ की बचपन की सारी यादों को बार-बार अपने हृदय पटल पर अंकित कर पढ़ते रहते हैं।

इजा बाबू का दगाड,
भै-बैणा वै रुंछ्याँ ।
इजू जॉछी घा काटंणा,
बाटा चानें रुंछ्याँ।[7]

कहीं मालपा और उखीमठ की जैसी त्रासदी का वर्णन करते हैं तो कहीं रोज-रोज जंगल काटे जाने, हरियाली नष्ट करने की भी बात करते हैं बीच-बीच में जब अपने गाँव जाते हैं तो उन्हें सालों पुरानी यादें ताजा हो आती हैं लेकिन अब वहाँ सब कुछ बदल चुका है इससे उदास भी हो जाते हैं।

चौमास लागि गौ सरग उरी गौ ।
मालपा गौं बटि पहाड घुरि गो ।।
देखने-देखने गौं सार्वे स्वेरी गो ।
मालपा गौं बटि पहाड घुरी गो ।।[8]

पहाड़ में जिस तरह शराब और नशे ने अपना अधिकार जमा किया है कि लोग व्यंग करते हुये कहने लगे हैं कि ''सूर्य अस्त पहाड़ मस्त'' इसके कुप्रभाव से पहाड़ को बचाये रखने की तमन्ना है कवि के मन में।

जन पिया शराब दाज्यू, जन पिया शराब
नानतिना ले सिकि जाला, है जाला खराब है जाला खराब'[9]

अपने 'पर्यावरण' कविता के द्वारा आज असंतुलित भौगोलिक वातावरण के प्रति चिन्ता व्यक्त की है। वह सबसे अपने वातावरण को स्वच्छ व सुन्दर रखने की बात करते हैं। आज जिस तरह से जंगलों का कटान हो रहा है उसको देखते हुए भावी जीवन में जो संकट आने वाला है कवि उसको अपनी लेखनी से दर्शाते हुए कहते हैं -

रुख डाला काटि हालि कि हवाला लछिन ।
एकै लिजी बिगड गौ, पर्यावरण

बूँण छाडि लागि गयाँ सडल काटणं
एकै लिजी बिगडि गौ पर्यावरणं।[10]

पहाड के प्राकृतिक सौन्दर्य की व्याख्या में मेघ जी कहते हैं यहाँ की हवा-पानी में जो शीतलता व स्वच्छता युक्त है वह मन व मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करती है। जो शहरों में कहाँ।प्राकृतिक सौन्दर्य इतना सुन्दर लगता है कि यहॉ पर मानों भगवान का निवास हो, इतनी सुन्दरता का समावेश है पहाड़ में जिसका वर्णन 'मेघ' ने बड़ी कलात्मकता से किया है।

पहाड़ में पर्यावरण प्रकृति चित्रण, पावन नदियों, श्वेत हिगालय, खेत खलिहान, रीति रिवाजों आदि सभी पर अपनी लेखनी चलाते हुये मेघ ने अपनी अभिव्यक्ति दी है। एक-एक गीत की व्याख्या करना सम्भव नहीं है कुल मिलाकर मेघ जी ने एक महत्वपूर्ण गीत संग्रह पाठकों को उपलब्ध कराया है बशर्ते कि पाठक इसका मनन करें। मेघ जी की कृतियों-कल्पनाओं का सावन दर्द लेखनी का, भारती की आरती, चाँद सितारे आँगन के (बालगीत), विनय करूँ अम्बे (वन्दना गीत), नरै (कुमाउँनी) एवं कहानी संग्रह माटी का कर्ज जो विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। इनके अतिरिक्त मेघ के प्रकाशनार्थ और भी कृतियाँ यथा गीत संग्रह, राजुला मालूशाही (खण्ड काव्य) तथा कुमाउँनी गीत संग्रह दौकार तैयार है जो शीघ्र ही पाठकों के हाथों में आ सकेंगी। कवि ने जीवन के हर पक्ष को अपनी लेखनी से कोरे कागज पर उतार कर कागज को महत्वपूर्ण बना दिया है कहीं वह लड़का-लड़की के बीच के अन्तर को बनाये रखने वाले समाज की निन्दा करते हैं वहीं पर्यावरण की भी उन्हें चिन्ता होती है। उन्हें अपनी दुद बोली के प्रति बड़ी ही चिन्ता है पहाड़ की खुली-खुली वादियों, अपनी बोली, संस्कृति, त्यौहारों, मेलों को इसी तरह चलते चलाते रहने की आकांक्षा उनके मन को कचोटती रहती है।

मेघ जी ने अपनी वंशावली पर भी महत्वपूर्ण एवं सराहनीय कार्य किया है। मेघ जी का सद्प्रयास कुमाऊँनी बोली, वहां की संस्कृति पर्यावरण रीति-रिवाज आदि को बचाये रखने का है साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उनका समर्पण भी उल्लेखनीय है।

सन्दर्भ सूची:-

1. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 29
2. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 1
3. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 3
4. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 8
5. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 11
6. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 12
7. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 29
8. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 38
9. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 45
10. नरै घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' पृष्ठ 21